Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 4.94
ISSN No. 2456-1665

भारतीय साहित्य में राग दरबारी उपन्यास की प्रासंगिकता

डॉ. दत्तात्रय फुके
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
राजर्षी शाहू महाविद्यालय, पाथ्री, तहसील–फुलंब्री
जिला– औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
ईमेल drdnphuke@gmail.com

भूमिका

जैसे जैसे उच्चस्तरीय वर्ग में गबन, धोकाधडी, भ्रष्टाचार और वंशवाद अपनी जडे मजबूत करता है, वैसे–वैसे आजसे पचपन वर्ष पहले का यह उपन्यास और ज्यादा प्रासंगिक होता जा रहा है। स्वातंत्र्योत्तर काल के महत्त्वपूर्ण रचनाकारों में से श्रीलाल शुक्ल सर्वोतम हस्ताक्षर माने गए हैं। भारतीय जीवन तथा समाज के मनोभावों की पहचान करके ही सर्वथा अभिव्यक्ति देने वाले सर्वत्र ही रचनाकार होता है। यह अभिव्यक्ति समय, समाज और सभ्यता का बेबाक चित्रण करने वाली है । लेखक सदैव अपने साथ युग को लेकर चलता है और विशेषतः कालजयी लेखक तो युग का सम्यक् चित्रण व विश्लेषण करके युग को अपने प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष खड़ा करता है। वह अतीत से आगे चलकर नई सभ्यता का निर्माण करता है । युगीन परिस्थितियों का तटस्थ होकर चित्रांकन प्रतिबिंबित करता है। श्रीलाल शुक्ल के उपन्यास में युगीन स्थितियों का यथार्थ रूप देखने को मिलता है, जिसमें अतिश्योक्ति न के बराबर है। उनके साहित्य में स्थितियों का यथार्थ बोध है, जिसके कारण वे समकालीन लेखकों में श्रेष्ठ सिद्ध होते हैं ।

शोध शब्दः राग दरबारी, संगीत, साहित्य, व्यंग्य, प्रतिद्वंदिता, शिवपालगंज, दस्तावेज, राजनीति, सामाजिक यथार्थ, विसंगतियाँ।

अध्ययन का उद्देश्य

'राग दरबारी' पढ़ने के बाद पाठक अपनी और समाज की विवशता पर दासता सा लगता है। पर यही निरीहता उसमें व्यवस्था बदलाव की एक बेचैनी भी पैदा करती है। भारतीय समाज के हर मूल्यों को जानने, समझने और परखने की इच्छा जागृत होती है। वह हर मूल्यों को अपने मूल्यों से तौलने पर बाध्य हो जाता है और जीवन के सही मूल्यों को पाने का सही रास्ता ढूँढ़ने लगता है।[1] जिन समस्याओं को श्रीलाल शुक्ल ने इतने वर्षों पहले उजागर किया वह समस्याएँ तो हमें आज भी वैसी ही दिखाई देती है।

राग दरबारी के व्यंग्य

कैलास नाथ यादव राग दरबारी के व्यंग्य के बारे में लिखते है कि, "श्रीलाल शुक्ल जी हिंदी के उन अप्रतिम व्यंग्य शिल्पियों में से एक है, जिनके समूचे लेखन में व्यंग्यात्मकता धडकन की तरह मौजूद है।

उनकी रचनात्मकता अमोघ थी, जैसे प्रकृति प्रदत्त हो, साथ ही उनमें अपने लक्ष्य से विचलित न होते हुए पूरी ईमानदारी से एक सार्थक लेखन करते रहने की अपूर्व क्षमता थी। अपनी यथार्थ परख दृष्टि से उन्होंने कभी समझौता नहीं किया। जिनका जीता जागता उपन्यास राग दरबारी है।"[2] हिन्दी व्यंग्य उपन्यास के रूप में 'राग दरबारी' का प्रकाशन 1968 में हुआ। डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी के शब्दों में हिन्दी के व्यंग्य उपन्यासों की इस दूरगामी यात्रा में 'राग दरबारी' को मील का पत्थर बनने का अवसर इस कारण मिला है कि, व्यंग्य चेतना से संपुष्ट संप्रेषण भंगिमा का ऐसा स्पष्ट विधान हिन्दी उपन्यासों के इतिहास में अन्यत्र दुर्लभ है । स्वातंत्र्योत्तर भारत के शहरों में पनपे राजनीतिक छलछन्द, मानवीय मूल्यहीनता और तज्जनित जीवन प्रणाली ने शहरों से आकर ग्रामीण परिवेश को भ्रष्ट और विसंगतियों से भर दिया है।[3] लेखक श्रीलाल शुक्ल यह सारा कचरा लाकर शिवपालगंज में उँडेल दिया है । उपन्यास की भूमिका में वे लिखते हैं – राग दरबारी का संबंध एक बड़े नगर के कुछ दूर बसे हुए गाँव की जिन्दगी से है, जो पिछले बीस वर्षों के प्रगति और विकास के नारों के बावजूद निहित स्वार्थों और अनेक अवांछनीय तत्वों के आघातों के सामने घिसट रही है। यह उसी जिन्दगी का दस्तावेज है।

शिवपालगंज में अच्छाइयों को छोड़कर सब कुछ है। इसलिए लेखक लिखते हैं – सारे मुल्क में शिवपालगंज ही फैला है। लेखक अपने व्यंग्यास्त्रों द्वारा शिवपालगंज में फैली विसंगतियों के पहाड़ को चकनाचूर करने को कटिबद्ध हैं ।

यहाँ खेल–खलिहान, गाय–बैल, किसान–त्यौहार नहीं हैं । जो हैं, वो हैं – सत्तालोलुप, भाषणबाजी, मतदान में धाँधली, हिंसा, दादावाद, कौडिल्ला छाप इन्सान, छल–गलत परिसंख्यान, रिश्वतखोरी, चरमरा गई पुलिस व्यवस्था, यौन विकृति, छुआछूत, कालाबाजारी, भ्रष्ट शिक्षा व्यवस्था, गुटबंदी, भ्रष्टाचार, संबंधों में मूल्यहीनता, राजनीतिक छलछन्द को साकार करने वाले पात्र हैं वैद्यजी। वे स्वार्थी, छली और अवसरवादी नेता हैं । आजादी के पहले वे अंग्रेजों के भक्त थे। आजादी के बाद भी अधिकारियों के प्रिय रहे । वे कथनी में गांधी की तरह कोई पद लेना नहीं चाहते, पर करनी में सत्तालोलुप हैं । वे छंगामल इंटर कॉलेज के मैनेजर और ओपरेटिव यूनियन के मैनेजिंग डाइरेक्टर हैं । अपने अनुयायी सनीचर को ग्रामपंचायत का प्रधान बनवा देते हैं ।

नेता लोग भाषणबाजी के बल पर अपने को सुरक्षित रखते हैं । उनको संतोष मिलता है कि उनके व्याख्यानों के कारण किसान प्रगतिशील हो रहे हैं । लेखक ने व्यंग्य किया कि एक नेता अड़तालीस घंटे बिना भाषण दिये रह जाने की बात याद आई तो उन्होंने सोचा – "हाय ! मैं कितना कंजूस हूँ । धिक्कार है मुझे, जो इस देश में पैदा होकर भी इतनी देर तक मुँह बंद किए रहा ।" रुप्पन रंगनाथ को भी समझाता है – देखो दादा, यह तो पालिटिक्स है । इसमें बड़ा बड़ा कमीनापन चलता है । दुश्मन, जैसे भी हो, चित करना चाहिए।

लेखक ने गाँव में वोटदाताओं पर व्यंग्य किया है । एक वोटदाता सनीचर से कहता है – वोट साला कौन छप्पन टके की चीज है । कोई भी ले जाए। सनीचर भी वोट मांगते हुए कहता है – देखो भाइयो !

मैं भी किसी से तिगड़मी कम नहीं हूँ और भला आदमी समझ कर मुझे वोट देने से कहीं इनकार न कर बैठना । वोट लेने के तीन तरीके हैं – पालक बालक और गुंडे के तमंचे और डंडों के बल पर, राजनीतिकों को धर्म से जोड़ कर और चुनाव अधिकारी को प्रभावित करके इसकी गलती की आड़ में । सनीचर केवल एक सस्ती घड़ी चुनाव अधिकारी को देकर बाजी मार लेता है।

गाँव की न्याय पंचायत की दुर्गति पर लेखक ने व्यंग्य किया है । पंचायत मंत्री गबन के मामले हुए हैं और अन्य पंच निरक्षर हैं । लोग इनके इन्साफ को कौडिल्ला छाप इंसाफ कहते हैं । जोगनाथ–गयादीन का मुकदमा, छोटे पहलवान की गवाही, वकीलों की बहस, न्यायाधीश का फैसला ये सब हमारी न्याय व्यवस्था पर व्यंग्य हैं ।

"भूदान यश" के नाम पर नेताओं की आपाधापी पर लेखक ने व्यंग्य किया कि गाँव की एक ऊसर मैदान को भूदान आंदोलन में दे दिया गया जो दान के रूप में ग्राम सभा को वापस मिला । वह ग्राम प्रधान के हाथ में आया जो भाई–भतीजों में बाँटा गया । क्रय–विक्रय के सिद्धांत से जो हिस्सा गरीबों और भूमिहीनों को मिला, वह दूसरों की जमीन थी, उस पर मुकदमा चला ।

यहाँ झूठा आँकड़ा दिखाकर प्रगति का हिसाब दिखाया जाता है। वन संरक्षण के नाम पर कुछ नहीं होता । केवल खोदी गई नालियाँ शौचालय के काम में आती हैं।

सत्ताधारी नेताओं की खुशामद करके अधिकारी विरोधी गुट के लोगों पर सख्ती दिखाते हैं । रिश्वत लेना बाबुओं के अधिकार क्षेत्र में आता है । लंगड़ से पांच रुपये रिश्वत न मिलने पर तहसील का नकलनवीस कसम खाता है – "मैं रिश्वत न लूँगा और कायदे से नकल दूँगा ।" नकल नहीं मिल पाती । मेले में सैनिटरी इंस्पेक्टर खोमचेवालों से रिश्वत लेता है ।

लेखक ने अस्तव्यस्त पुलिस व्यवस्था पर व्यंग्य किया है । वैद्यजी का विरोध करने वाले दारोगा का शहर में तबादला हो जाता है । नया दारोगा चोर जोगनाथ को दंडित नहीं कर पाता है, क्योंकि वह वैद्यजी का आदमी है । तमंचा रखने वाला कॉलेज विद्यार्थी बंशी बजाता हुआ आराम से थाने से मुक्त होता है । अपराधी अदालत में चालान होने में अपना कल्याण मानकर दारोगा से यह काम जल्दी करने का अनुरोध करता है । अदालत में भी मुलाजिम हरिराम को कत्ल के जुर्म में बाइज्जत बरी किया जाता है ।[4]

गाँव भर में यौन विकृति की दुर्गंध फैली हुई है, जिस पर लेखक ने व्यंग्य किया है । बेला अविवाहित होकर भी सिनेमा – शैली में प्रेमपत्र लिखती है, यौन क्षुधा मिटाने रात को छतों को पार करती हुई रुप्पन से मिलने आती है । रुप्पन भी प्रेम पत्र लिखता है – चारित्रिक दोष वैद्यजी, कुसदर प्रसाद, सनीचर का भी है ।

लेखक ने गाँव की छुआछूत के प्रति व्यंग्य किया है क्योंकि छुआछूत इस देश का धर्म है । इसलिए शिवपालगंज में भी दूसरे गाँवों की तरह अछूतों के लिए अलग–अलग मुहल्ले थे । लेखक गाँव में होने

वाली कालाबाजारी पर व्यंग्य करते हैं । सनीचर अपनी दुकान में खुले आम कुछ चीजें बेचता है, पर छिपकर स्थानीय अस्पताल के स्टोर की दवाइयाँ प्राइमरी स्कूल के दूध के पाउडर के डिब्बे और नशीले पदार्थ – गांजा, भांग, चरस, बेचता है ।

परिवेश की कुरूपता पर व्यंग्य करके लेखक ने खुले मैदान में शौच जाने का वर्णन किया है – "सड़क की पटरी पर दोनों ओर कुछ गठरियाँ – सी रखी हुई नजर आयीं । ये औरतें थीं जो कतार बाँध कर बैठी थीं । ये इत्मीनान से बातचीत करती हुई वायु सेवन कर रही थीं और लगे हाथ मल–मूत्र विसर्जन भी।" पेट्रोल स्टेशन के पास की दुकानों की मिठाइयों की स्थिति इस प्रकार थी –"उनमें मिठाइयाँ भी थीं जो दिन रात आँधी–पानी और मक्खी–मच्छरों के हमलों का बहादुरी से मुकाबला करती थीं । लेखक ने लिखा कि शिवपालगंज के बस अड्डे की गंदगी बड़े नियोजित ढंग की थी।"

छंगामल इंटर कॉलेज के माध्यम से शिक्षा पर करारा व्यंग्य किया गया है। प्रिंसिपल को रोज वैद्यजी के दरवार में हाजिरी देनी पड़ती है। प्रिंसिपल और मैनेजर अपने रिश्तेदारों को कॉलेज में नियुक्ति देते हैं। कॉलेज का पैसा गबन करते हैं। खन्ना मास्टर गुटबंदी में लगा हुआ है । मोतीराम अध्यापक की अपेक्षा आटा चक्की पर अधिक ध्यान देते हैं। प्रिंसिपल बुद्धिजीवियों की विशेषताओं का उल्लेख इस प्रकार करते हैं तो हालत यह है कि बुद्धिजीवी पर विलायत का एक चक्कर लगाने के लिए यह साबित करना पड़ जाए कि हम अपने बाप की औलाद नहीं हैं जो साबित कर देंगे । चौराहे पर दस जूते मार लो पर एक बार अमेरिका भेज दो। ये हैं बुद्धिजीवी ? रिसर्च करने को रंगनाथ घास खोदने का काम कहता है । बद्री रंगनाथ को सूअर का लैंड कहता है । लेखक व्यंग्य करते हुए कहते हैं वर्तमान शिक्षा पद्धति रास्ते में पड़ी हुई कुतिया है, जिसे कोई भी लात मार सकता है ।[5]

ग्रांट खोर कालिका प्रसाद सरकारी अनुदान और ऋण लेने में कोई कसर नहीं छोड़ते । लेखक, सरकारी योजनाएँ कैसे असफल हो जाती हैं, उस पर व्यंग्य करके कहते हैं कि वसूली के वक्त ऐसे व्यक्ति अधिकारियों से मिलकर कारवाई रुकवा देते हैं।

परिवार में सब मर्यादा का उल्लंघन करने लगे हैं । कुसहट और छोटे पहलवान, वैद्यजी और बद्री पहलवान में संबंध पिता–पुत्र का होने पर भी वह मर्यादा की सीमा अतिक्रांत कर जाता है । लेखक ने अपनी सपाट बयानी के द्वारा विभिन्न असंबंधित कथाओं को जोड़कर समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार को व्यंग्य के माध्यम से उभारने का प्रयास किया है। उन्होंने समाज में मानव मूल्यों की पुनः प्रतिष्ठा करने के लिए पाठकों को सजग कर दिया है ।

कथा वस्तु और पात्र

कालजयी उपन्यासकार श्रीलाल शुक्ल का 'राग दरबारी' उपन्यास सातवें दशक का एक विशिष्ट उपन्यास है। प्रकाशन से ही यह उपन्यास समीक्षकों, लेखकों, सुधी पाठकों तथा छात्र छात्राओं की जिज्ञासा, कौतूहल तथा चर्चा का विषय माना गया है। हिन्दी उपन्यास साहित्य में एक 'मील का पत्थर'

है– 'रागदरबारी'। यह उपन्यास स्वातंन्र्योत्तर भारतीय ग्राम जीवन का अत्यन्त तटस्थ एवं मार्मिक चित्रण प्रस्तुत करता है। विषय की परिधि अत्यन्त विशाल है।

"रागदरबारी" की कथावस्तु परम्परागत उपन्यासों की कथात्मक परम्परा के सर्वथा भिन्न है। उसकी कथावस्तु का संगठन सर्वथा मौलिक तथा नूतन भंगिमाओं के लिए हुआ है। "रागदरबारी" की कथावस्तु का सम्बन्ध– "इन सैंकड़ों गांवों की जिंदगी से है।"

राजनीतिक परिवेश

स्वतन्त्रता से पूर्व, भारतीय जन–नेताओं तथा जन सामान्य के मानस में एक ही उद्देश्य घूम रहा था वह था, हर अवस्था में स्वतन्त्रता की प्राप्ति तथा अंग्रेजों का भारत–भूमि से निष्कासन। स्वातंन्र्योत्तर भारतीय समाज में राजनीतिक गतिविधियां बदली और अंग्रेजों से राजनीतिक सत्ता भारतीयों के हाथ में आयी और उसका परिणाम यह है लोकतंत्र की बहाली। इन सब का सजीव चित्रण हमें श्री लाल शुक्ल के उपन्यासों में देखने को मिलता है।

सामाजिक व्यवस्था का मूल्य

साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्य कार का सीधा सम्बन्ध समाज के साथ होता है। वह अपनी रचना का विषय, घटना, पात्र, वातावरण, समय से ही लेता है। कोई भी रचना तभी ही कालजयी बनती है जब समय को रचना में ठीक ढंग से उठाया गया हो, जिस रचना में सामाजिक वातावरण को न उभरा गया हो तो वह रचना कालजयी कभी नहीं बन सकती।

भारत में आधुनिकीकरण के आने से सामाजिक जीवन हर तरह से प्रभावित हुआ, जिसमें सामाजिक,–पारिवारिक सम्बन्धों को परिभाषित करने की जरूरत पड़ी। परम्परागत, सामाजिक, नैतिक मूल्य बिखरने लगे। इस प्रकार से श्री लाल शुक्ल के उपन्यास 'रागदरबारी' में सामाजिक आयाम देखने को मिलता है।

शैक्षणिक व्यवस्था का मूल्य

शिक्षा व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की प्रथम अनिवार्यता होती है। साथ ही वह उसकी शक्ति का केन्द्र भी। राष्ट्र को सुयोग्य, निश्चित एवं शिक्षित नागरिक प्रदान भी शिक्षा का व्यापक उद्देश्य माना जाता है। 'रागदरबारी' में श्रीलाल शुक्ल ने इस प्रकार से शैक्षिक विद्रूपताओं को उठाने का प्रयास किया है।

'रागदरबारी' उपन्यास व्यंग्य–फलक पर वर्तमान शिक्षा–प्रणाली से सम्बन्धित प्रत्येक असंगति का खुल कर चित्रण करता है। किसी भी राष्ट्र की बौद्धिक और सांस्कृतिक चेतना के विकास हेतु राष्ट्रीय भावना और शिक्षण–व्यवस्था का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली अत्यन्त ही दोषपूर्ण बन चुकी है। शिक्षा–पद्धति का सुनिश्चित मानदण्ड स्थापित करने में हमें हमेशा से असफल रहे है। ऐसा प्रतीत होता है मानो ..... ''वर्तमान शिक्षा–पद्धति रास्ते में पड़ी हुई कुतिया है, जिसे कोई भी लात मार सकता है।''[6]

इस प्रकार से 'रागदरबारी' का छंगामल विद्यालय ने केवल शिवपालगंज का ही अपितु सम्पूर्ण भारत भर में फैले हुए प्राथमिक शालाओं से विद्यालयों के शोध कार्यों का सम्पूर्ण लेखा–जोखा प्रस्तुत करता है। शिक्षण क्षेत्र में विभिन्न विकृतियों का वृहद कोश है यह उपन्यास–'रागदरबारी'

निष्कर्ष

इस प्रकार से लेखक ने 'रागदरबारी' के ग्रामीण अंचल–बोध की तीव्र व प्रामाणिक अनुभूति के यथार्थ बिम्ब किये है और उसमें उसे आशातीत सफलता भी प्राप्ति हुई है। 'रागदरबारी' उपन्यास में स्वातंत्र्योतर परिस्थिति के सम्यक्, व्यापक, परिवेष को समेटने वाला जीवंत दस्तावेज है और अनेक परंपरागत औपन्यासिक तत्वों को एक ओर ठेलकर रचनात्मक स्तर पर कुछ नए मोड़ देते का सफल प्रयास किया है। 'रागदरबारी' की प्रमुखता का प्रभावशाली कारण उसकी शिल्प संयोजना और भाषिक सौष्ठव है। 'रागदरबारी' की भाषा के संदर्भ में राधा दीक्षित का कहना है कि–''रागदरबारी का लेखक भाषा के प्रति बेहद संवेदनषील और सतर्क है। भाषा एक दर्रे पर नहीं भागती। उसका प्रयोग परिवेष और पात्र को ध्यान में रखते हुए किया गया है।''[7]

इस प्रकार से व्यंग्य उपन्यास में व्यंग्य भाषा के सभी उपकरणों का सटीक और कुशल प्रयोग हुआ है, इसमें कोई संदेह नहीं। व्यंग्यात्मक कृति के रूप में श्रीलाल शुक्ल का बहुचर्चित उपन्यास 'रागदरबारी' कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण बन पड़ा है। इसमें जीवन के बदलते हुए मूल्यों के परिपेक्ष्य में, शहर और कस्बे में जन–जीवन समाज व्यवस्था तथा सरकारी एवं अर्धसरकारी तंत्र के क्रमशः प्रवष्टि भ्रष्टाचार का व्यंग्यात्मक शैली में चित्रण है। इसमें लेखक ने एक बड़े कस्बे के माध्यम से पूरे भारतीय जीवन की संस्कार हीनता व मूल्य शून्यता ध्वनित किया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत देष के तथा कथित विकास की यथार्थ एवं तीव्र व्यंग्यात्मक झांकी, शायद हिन्दी के किसी उपन्यास में दृष्टिगोचर नहीं होती। षिल्प और कथ्य की दृष्टि से 'रागदरबारी' एक अत्यंत सुगठित एवं प्रौढ़ कृति है।''

सारांश

गॉव आए रंगनाथ की ऑखों में गॉव के जीवन का वह दृश्य है जो स्वेच्छा से भ्रष्टाचार और बेकारी के दलदल में फॅसा हुआ है। उपन्यास में कोई कथानक नहीं है, लेकिन इसमें पात्रों का एक से बढकर एक जीवंत चित्रण और राजनीति तथा समाज पर तीखी व्यंग्यात्मक टिप्पणियॉ है। लेखक ने इस उपन्यास के अंतिम अध्याय को पलायन संगीत नाम दिया है। रंगनाथ की आंतरिक आवाज, जिसकी ऑखों के माध्यम से उपन्यास सामने आता है, राग दरबारी जिस जगह पर हुआ उस शिवपालगंज से भागने का आग्रह करती है, वह निम्नलिखित शब्दों में ''तुम मॅझोली हैसियत के मनुष्य हो और मनुष्यता के कीचड में फस गये हो। तुम्हारे चारो ओर कीचड ही कीचड है। कीचडकी चापलुसी मत करो। इस मुगालने मे न रहो की कीचड से कमल पैदा होता है। कीचड में कीचडही पनपता है। वही फैलता है, वही उलछता है। कीचड से बचो। यह जगह छोडो। यहॉ से पलायन करो। भागो, भागो, भागो। यथार्थ तुम्हारा पिदा कर रहा है।'' राग दरबारी उपन्यास की विषयवस्तु का प्रारंभ प्रधान पात्र रंगनाथ के शहर से प्रस्थान से है।

रंगनाथ शहर से गॉव आता है। गॉव के प्रति उसकी आदर्श धारणाएँ प्रत्यक्ष अनुभव से बदलती हैं। उपन्यास में रंगनाथ गॉव की विविध घटनाओं का प्रत्यक्षदर्शी है। उसका गॉव से ऊबकर शहकर की ओर पलायन विषयवस्तु का समापन है। उपन्यास में एक शोध–छात्र के माध्यम से स्वातंत्र्योत्तर गॉव के बदलते परिवेश मूल्य धारणाएँ राजनीतिक प्रभाव शोषण के नये तरीको को सजगता से प्रस्तुत किया गया है। लेखक शोषण की कार्य मीमांसा करते हुए यथार्थ का मूल्यांकन करता है। उससे उपन्यास साकार होता है।

इस प्रकार हम यह कह सकते है कि शुक्ल जी ने सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक, आदि मानव जीवन के सभी पक्षों की विसंगतियों को अपने व्यंग्य का आधार बनाया है। उन्होंने अपने समय के सामाजिक यथार्थ को उद्‌धाटित किया है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. डॉ सीमा मिश्रा – श्रीलालशुक्ल के राग दारबारी का राजनैतिक संदर्भ, पृ.–21
2. कैलास नाथ यादव – International Journal of Scientific & Innovative Research Studies पृ.–116
3. श्रीलाल शुक्ल – राग दरबारी, राजकमल प्रकाशन, तीसरा संस्करण, पृ.–250
4. श्रीलाल शुक्ल – रागदरबारी, राजकमल प्रकाशन, तीसरा संस्करण, पृ. 405
5. डॉ. ज्ञान चन्द्र गुप्त–स्वातन्त्रोत्तर हिन्दी उपन्यास और ग्राम चेतना, पृ. 273–74
6. डॉ. राधा दीक्षित–रागदरवारी का शैली वैज्ञानिक अध्ययन, पृ. 249
7. डॉ. शिव कुमार वर्मा, हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियां, पृ. 638